ज्ञान
से बनती है
पहचान
और निखरता है
इंसान
Seek Knowledge. Build Character.
Serve Humanity.
हमारा मक़सद सिर्फ कामयाबी नहीं,
बक्कि बेहतर इंसान बनाना है।
ज्ञान
हासिल करो
किताब और दुनियावी
ज्ञान दोनों ज़रूरी हैं.
अख़लाक़
अपनाओ
अच्छे अख़लाक़ से
दिलों में जगह बमती है।
इंसानियत
की खिदमत करो
हर शख़्स से मोहब्बत,
हर ज़रूरतमंद की मदद।
ज्ञान (ILM) • अख़लाक़ (AKHLAQ) • इंसानियत
मिलकर बनाएं ऐमा मुआशरा, जहां अमन, मोहब्बत और तरक्की हो।
चलो साथ चलें, बेहतर कल बनाएं।

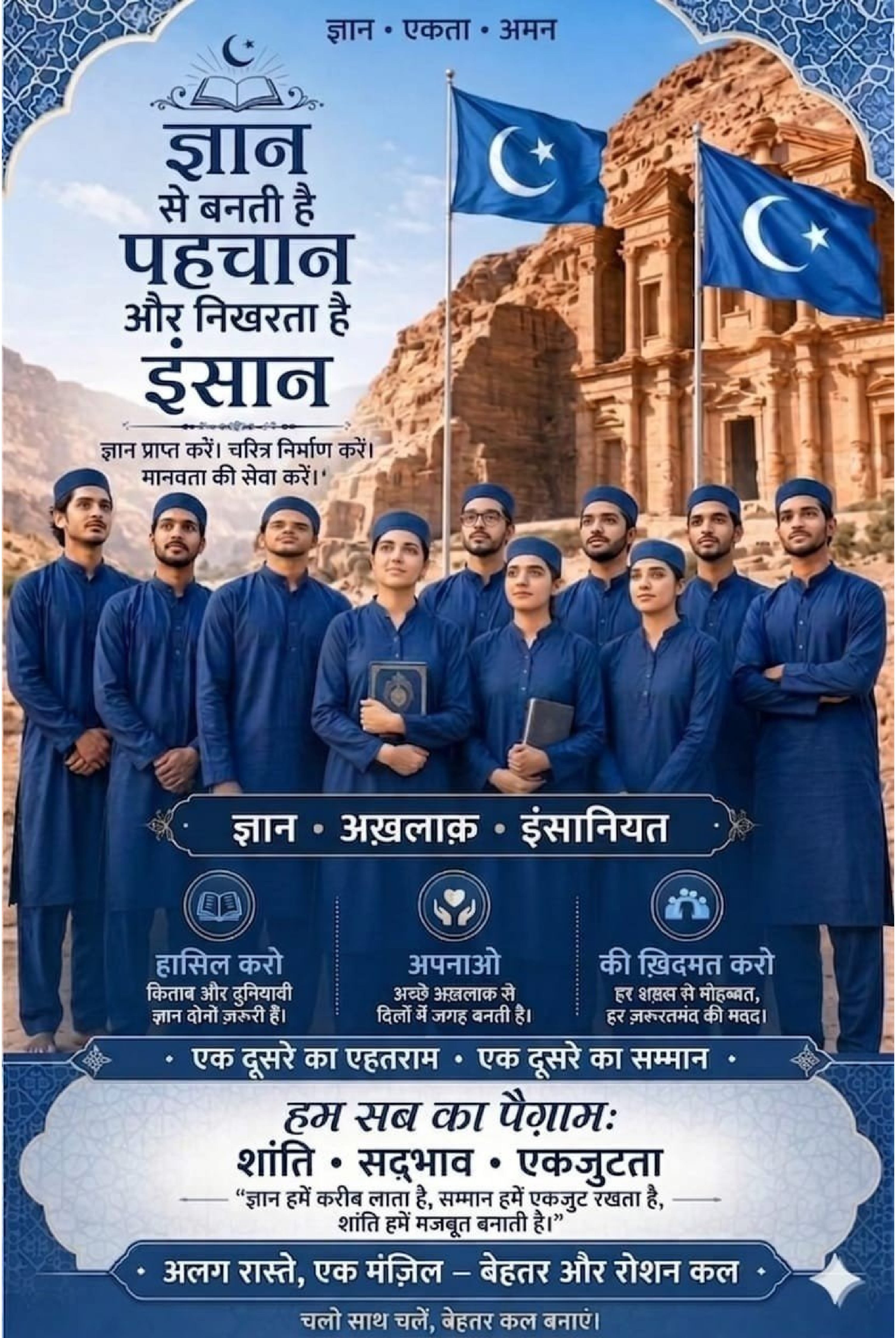
ज्ञान • एकता • अमन
ज्ञान
से बनती है
पहचान
और निखरता है
इंसान
ज्ञान प्राप्त करें। चरित्र निर्माण करें।
मानवता की सेवा करें।'
ज्ञान • अख़लाक़ • इंसानियत
हासिल करो
किताब और दुनियावी ज्ञान दोनों ज़रूरी हैं।
अपनाओ
अच्छे अख़लाक से दिलों में जगह बनती है।
की ख़िदमत करो
हर शख़्स से मोहब्बत, हर ज़रूरतमंद की मदद।
• एक दूसरे का एहतराम • एक दूसरे का सम्मान •
हम सब का पैग़ाम:
शांति • सद्भाव • एकजुटता
"ज्ञान हमें करीब लाता है, सम्मान हमें एकजुट रखता है,
शांति हमें मजबूत बनाती है।"
• अलग रास्ते, एक मंज़िल – बेहतर और रोशन कल •
चलो साथ चलें, बेहतर कल बनाएं।

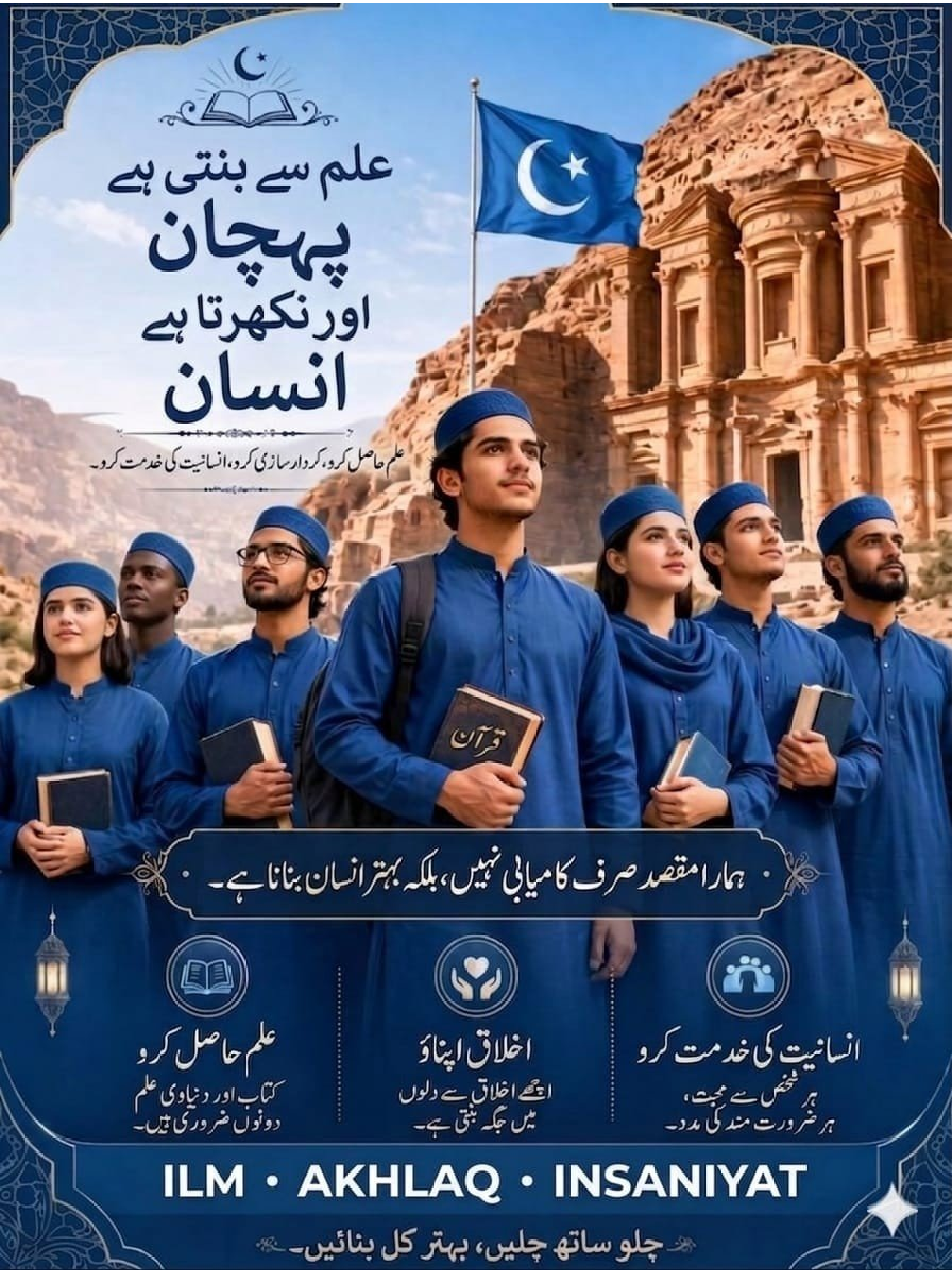
علم سے بنتی ہے
پہچان
اور نکھرتا ہے
انسان
علم حاصل کرو، کردار سازی کرو، انسانیت کی خدمت کرو۔
قرآن
ہمارا مقصد صرف کامیابی نہیں، بلکہ بہتر انسان بنانا ہے۔
انسانیت کی خدمت کرو
ہر شخص سے محبت، ہر ضرورت مند کی مدد۔
اخلاق اپناؤ
اچھے اخلاق سے دلوں میں جگہ بنتی ہے۔
علم حاصل کرو
کتاب اور دنیاوی علم دونوں ضروری ہیں۔
ILM • AKHLAQ • INSANIYAT
چلو ساتھ چلیں، بہتر کل بنائیں۔

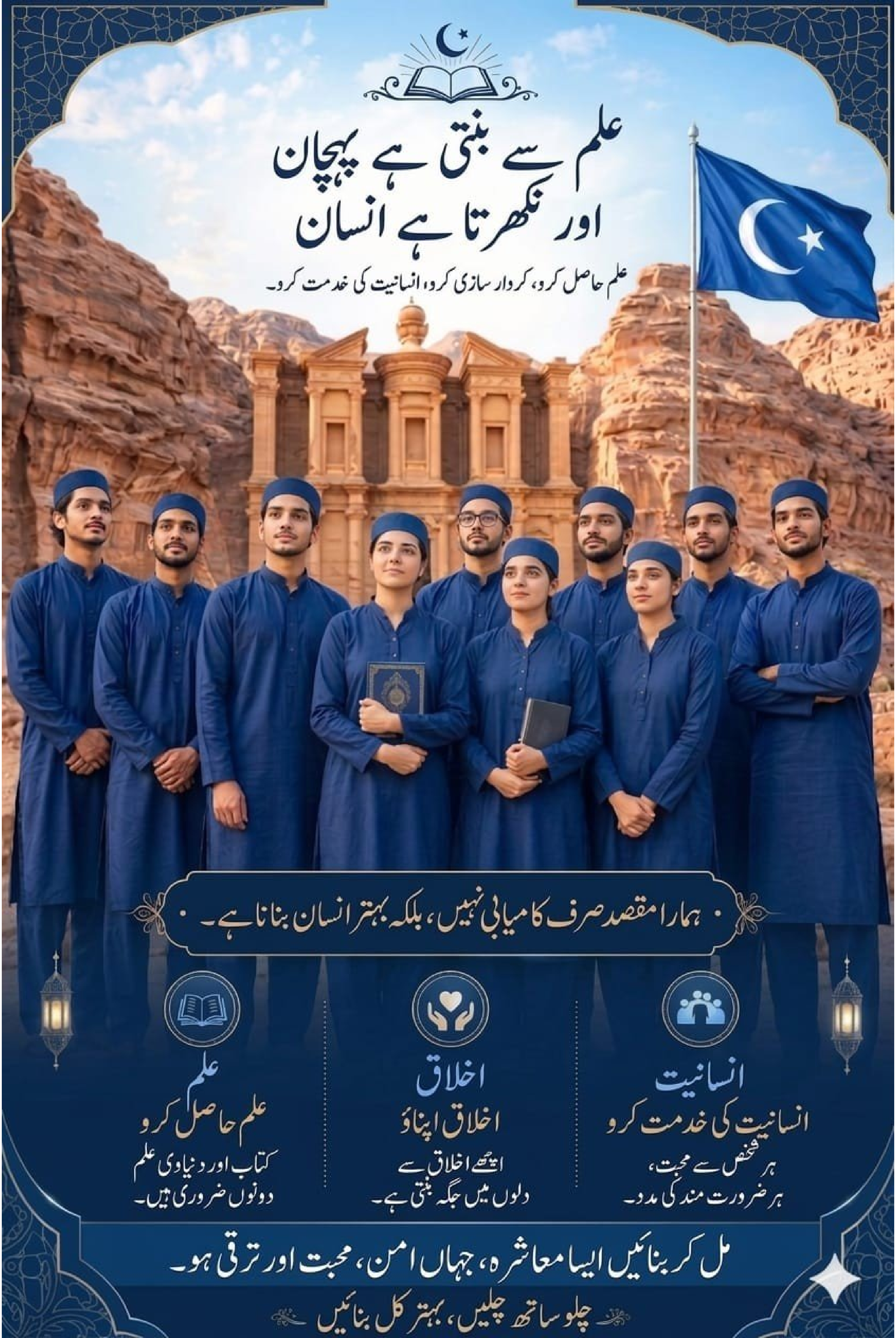
علم سے بنتی ہے پہچان
اور نکھرتا ہے انسان
علم حاصل کرو، کردار سازی کرو، انسانیت کی خدمت کرو۔
ہمارا مقصد صرف کامیابی نہیں، بلکہ بہتر انسان بنانا ہے۔
انسانیت
انسانیت کی خدمت کرو
ہر شخص سے محبت، ہر ضرورت مند کی مدد۔
اخلاق
اخلاق اپناؤ
اچھے اخلاق سے دلوں میں جگہ بنتی ہے۔
علم
علم حاصل کرو
کتاب اور دنیاوی علم دونوں ضروری ہیں۔
مل کر بنائیں ایسا معاشرہ، جہاں امن، محبت اور ترقی ہو۔
چلو ساتھ چلیں، بہتر کل بنائیں

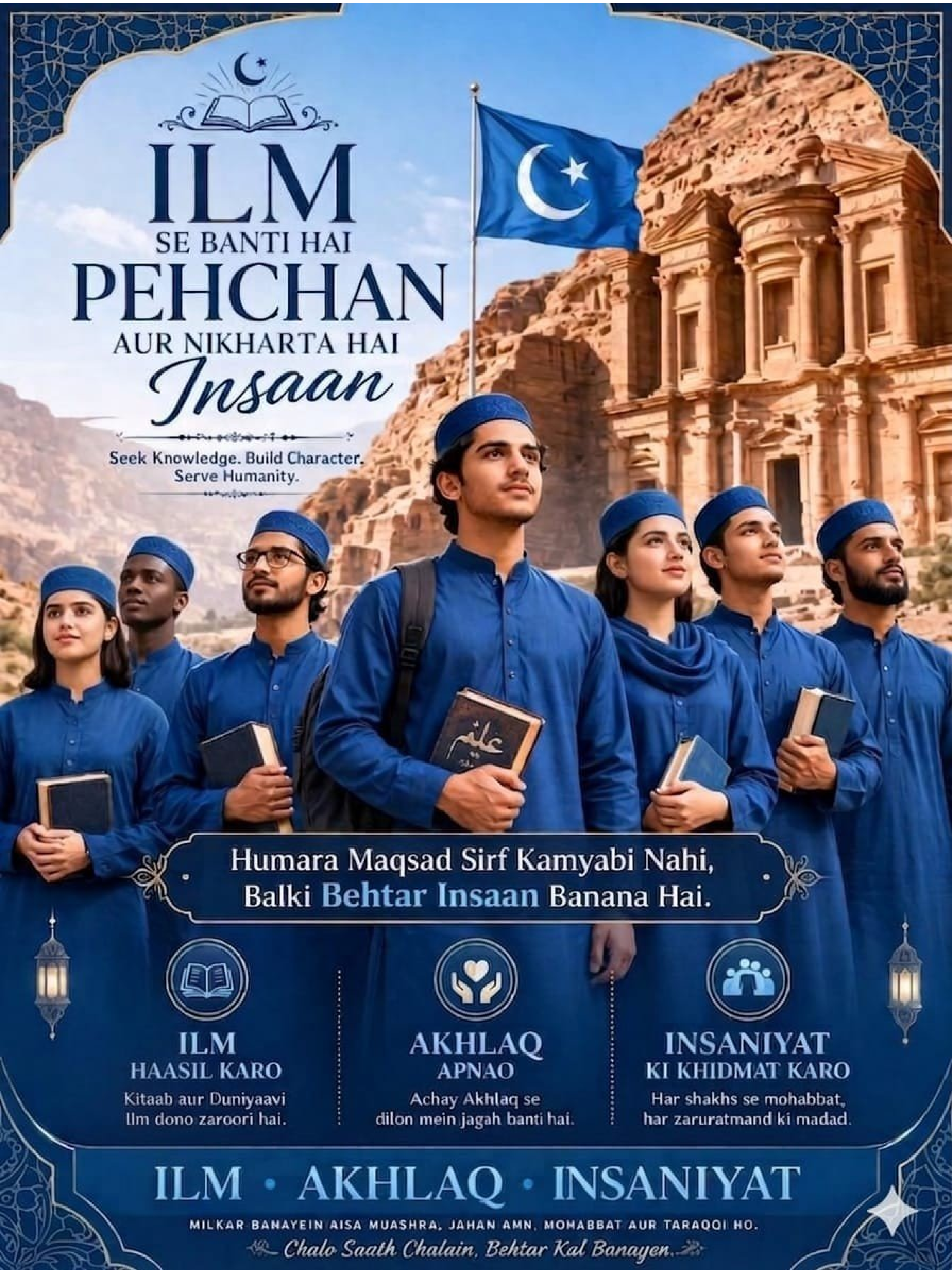
ILM
SE BANTI HAI
PEHCHAN
AUR NIKHARTA HAI
Insaan
Seek Knowledge. Build Character.
Serve Humanity.
Humara Maqsad Sirf Kamyabi Nahi,
Balki Behtar Insaan Banana Hai.
ILM
HAASIL KARO
Kitaab aur Duniyaavi
Ilm dono zaroori hai.
AKHLAQ
APNAO
Achay Akhlaq se
dilon mein jagah banti hai.
INSANIYAT
KI KHIDMAT KARO
Har shakhs se mohabbat,
har zaruratmand ki madad.
ILM • AKHLAQ • INSANIYAT
MILKAR BANAYEIN AISA MUASHRA, JAHAN AMN, MOHABBAT AUR TARAQQI HO.
Chalo Saath Chalain, Behtar Kal Banayen.

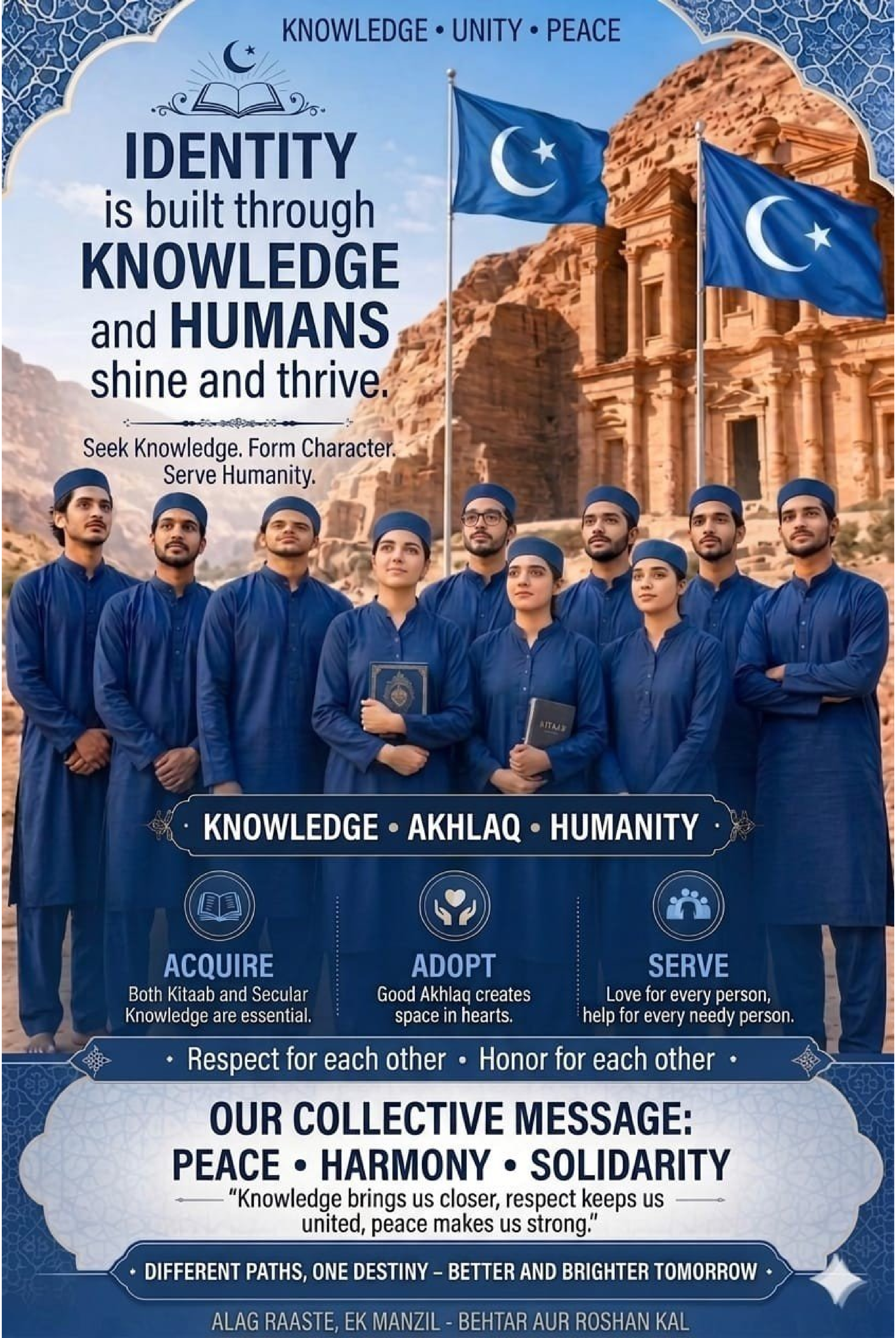

KNOWLEDGE • UNITY • PEACE
IDENTITY
is built through
KNOWLEDGE
and HUMANS
shine and thrive.
Seek Knowledge. Form Character.
Serve Humanity.
• KNOWLEDGE • AKHLAQ • HUMANITY •
ACQUIRE
Both Kitaab and Secular
Knowledge are essential.
ADOPT
Good Akhlaq creates
space in hearts.
SERVE
Love for every person,
help for every needy person.
• Respect for each other • Honor for each other •
OUR COLLECTIVE MESSAGE:
PEACE • HARMONY • SOLIDARITY
"Knowledge brings us closer, respect keeps us
united, peace makes us strong."
• DIFFERENT PATHS, ONE DESTINY – BETTER AND BRIGHTER TOMORROW •
ALAG RAASTE, EK MANZIL - BEHTAR AUR ROSHAN KAL

तालिब-ए-इल्म जमात

परिचय:

1. पदयात्रा की पृष्ठभूमि
वर्तमान सामाजिक परिस्थिति
क्यों यह यात्रा आवश्यक है
2. यात्रा का नाम
उदाहरण:
"तालिब-ए-इल्म जमात सौहार्द एवं संवाद पदयात्रा"
3. आयोजक संस्था
तालिब-ए-इल्म जमात एवं सहयोगी संगठन
4. यात्रा का उद्देश्य
समाज में संवाद को बढ़ाना
दीन से जुड़े प्रश्नों पर चर्चा
सहअस्तित्व और अमन का संदेश
समाज के भीतर आत्ममंथन
5. मुख्य मुद्दे / वैचारिक आधार
सवाल पूछने का अधिकार
दीन में ज़बरदस्ती नहीं
इज्तेहाद और तर्क की परंपरा
सहअस्तित्व और अमन।

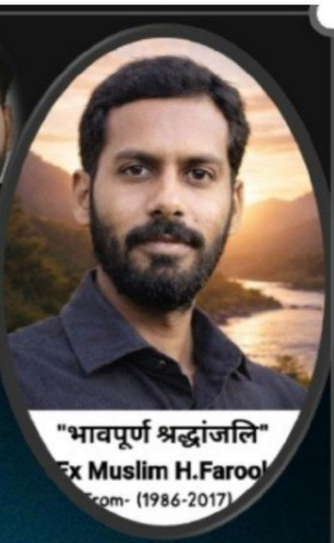

ालिब-ए-इल्म जमात

6. यात्रा का संदेश
इल्म, अमन और संवाद
समाज में सकारात्मक सुधार

7. यात्रा का मार्ग (Route Plan)
शुरुआत कहाँ से होगी
किन शहरों/इलाकों से गुज़रेगी
समापन कहाँ होगा

8. यात्रा की तिथियाँ
प्रारंभ तिथि
समापन तिथि
कुल दिन

9. कार्यक्रम की रूपरेखा
पदयात्रा
जनसंवाद
सभा / भाषण
ज्ञापन सौंपना

10. राउंड टेबल वार्ता प्रस्ताव
उलेमा
बुद्धिजीवी
अन्य धर्मों के प्रतिनिधि
सरकार के प्रतिनिधि।

तालिब-ए-इल्म जमात

11. प्रतिभागियों की संख्या
मुख्य पदयात्री
स्थानीय प्रतिभागी
स्वयंसेवक
12. आचार संहिता
यात्रा पूरी तरह शांतिपूर्ण होगी
किसी समुदाय के खिलाफ नारे नहीं
कानून का सम्मान
13. सुरक्षा एवं व्यवस्था
स्वयंसेवक दल
प्रशासन से सहयोग
भीड़ प्रबंधन
14. मीडिया और जनसंपर्क
प्रेस कॉन्फ्रेंस
सोशल मीडिया
प्रेस नोट
15. अपेक्षित सहयोग
प्रशासनिक अनुमति
सामाजिक सहयोग
मीडिया समर्थन
16. समापन घोषणा
यात्रा के निष्कर्ष
आगे की कार्ययोजना।

तालिब-ए-इल्म जमात

जर्नल डिटेल तालिब ए इल्म पद
यात्रा,,,,,,,,
चुकी मुसलमानों में को सहअस्तित्व,की
कोई गुंजाइश ही नहीं है जैसे कि मुल्हिद
मुशरिक काफिर अन्य के साथ सदैव
विवाद बना रहता है ओर यह लोग कभी
भी इस्लामी से सवाल ज़बाब नहीं कर
सकते परन्तु तालिब ए इल्म तालिबान
का (को एजिस्टेंस) सदैव बना रहा
उदाहरण तालिब होने के नाम पर इन्होंने
पूरा एक देश अफगानिस्तान को अपनी
निगेटिवविटी ऊर्जा से अपने कब्जे में ले
लिया और खूब कत्लो गारत की जबकि
उनका सहायक वहां कोई नहीं था
इस्लामान में अपने इसी अधिकार का
इस्तेमाल करते हुए हम शांति पूर्ण तरीके
से सैकुलर गवर्मेंट को इन्वॉल्व करते
हुए हम अपने अधिकारों की सुरक्षा की
गारंटी अपनी सैकुलर गवर्मेंट और अपने
मुस्लिम समाज से चाहते है"

इल्म पसंद शहंशाह-हिन्द दारा शिकोह

तालिब-ए-इल्म जमात

वरिष्ठ तालिब-ए-इल्म
समीर

तालिब-ए-इल्म जमात : 7- बिंदु चार्टर

1. सवाल पूछना हमारा अधिकार है

तालिब-ए-इल्म जमात का मानना है कि दीन को समझने के लिए सवाल पूछना, तर्क करना और जवाब मांगना हर मुसलमान का अधिकार है।

किसी भी व्यक्ति को सवाल पूछने के कारण बदनाम या डराया नहीं जाना चाहिए।

2. दीन में ज़बरदस्ती स्वीकार नहीं

कुरआन का स्पष्ट सिद्धांत है कि दीन में ज़बरदस्ती की कोई गुंजाइश नहीं है।

इसलिए फ़तवों, सामाजिक दबाव या भय के माध्यम से लोगों की आवाज़ दबाना दीन की रूह के खिलाफ है।

3. इज्तेहाद और ज्ञान की परंपरा को पुनर्जीवित किया जाए

इस्लामी इतिहास में इज्तेहाद (स्वतंत्र चिंतन) की परंपरा रही है।

तालिब-ए-इल्म जमात मानती है कि आज के समय में भी नए प्रश्नों पर ज्ञान और तर्क के आधार पर विचार होना चाहिए।

4. सहअस्तित्व की स्पष्ट नीति

मुस्लिम समाज को अन्य समुदायों के साथ अमन, सम्मान और सहअस्तित्व के सिद्धांत पर खड़ा होना चाहिए।

दुनिया को यह दिखाना होगा कि मुसलमान दार-उल-अमन के निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं।

5. राउंड टेबल वार्ता

तालिब-ए-इल्म जमात यह मांग करती है कि एक खुली राउंड टेबल वार्ता आयोजित की जाए, जिसमें उलेमा, बुद्धिजीवी, सामाजिक कार्यकर्ता, अन्य धर्मों के प्रतिनिधि और सरकार के प्रतिनिधि शामिल हों, ताकि विवादों और भ्रमों का समाधान संवाद से निकाला जा सके।

6. शरीअत क्रिमिनल लॉ पर खुला राष्ट्रीय संवाद

अगर मुस्लिम समाज शरीअत के सिद्धांतों पर चलने का दावा करता है, तो केवल मुसलमानों पर शरीअत क्रिमिनल लॉ लागू करने के विषय पर ईमानदार और खुला राष्ट्रीय संवाद होना चाहिए।

7. आत्म-सुधार और जिम्मेदारी

तालिब-ए-इल्म जमात का मानना है कि किसी भी समाज की मजबूती आत्ममंथन और आत्म-सुधार से आती है।

मुस्लिम समाज को अपने भीतर संवाद, ज्ञान और जवाबदेही की संस्कृति को मजबूत करना होगा।

तालिब-ए-इल्म जमात

वरिष्ठ तालिब-ए-इल्म
सलीम अहमद

हमारा प्रस्ताव

भारत एक सैकुलर देश है, जहाँ सभी धर्मों को अपने-अपने धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीने की स्वतंत्रता है।

इसी संदर्भ में तालिब-ए-इल्म जमात यह प्रस्ताव रखती है कि सैकुलर भारत में केवल मुसलमानों पर शरीअत आधारित क्रिमिनल लॉ लागू करने के विषय पर गंभीर राष्ट्रीय संवाद होना चाहिए।

हमारी मांग

इस विषय पर एक खुली "राउंड टेबल वार्ता" आयोजित की जाए, जिसमें शामिल हों:

मुस्लिम उलेमा और आलिम

मुस्लिम बुद्धिजीवी और सामाजिक कार्यकर्ता

अन्य धर्मों के प्रतिनिधि

तथा भारतीय सैकुलर सरकार के प्रतिनिधि

ताकि इस विषय पर ईमानदार, खुला और जिम्मेदार संवाद हो सके।

भले ही भारतीय सरकार को इसमें समय लगे, लेकिन मुस्लिम समाज को स्वयं आगे बढ़कर यह पहल करनी चाहिए कि वह अपने ऊपर शरीअत क्रिमिनल लॉ लागू करने की जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार है।

"मुसलमानों पर शरीअत क्रिमिनल लॉ लागू करो।"

हमारी घोषणा

हम सभी तालिब-ए-इल्म जमात के सदस्य हैं।

और जो लोग अपने आपको फ़ख़्र से मुसलमान कहते हैं, वे भी दरअसल ज्ञान के तलाशगार ही हैं।

फर्क सिर्फ इतना है कि जब वे सवाल पूछते हैं तो आलिमों-फ़ाज़िलों की डाँट खाकर चुप हो जाते हैं।

लेकिन तालिब-ए-इल्म जमात सवाल पूछने के अपने अधिकार से पीछे नहीं हटेगी।

क्योंकि अल्लाह ने इंसान को सोचने और समझने की क्षमता दी है।

जब "पेट का दीन" चलाने वाले लोग सवालों को दबाने लगते हैं, पाबंदियाँ लगाने लगते हैं और लोगों को चुप कराने की कोशिश करते हैं – तो यह न इंसाफ़ है और न दीन की रूह के अनुकूल।

हमारी अंतिम अपील

इसलिए तालिब-ए-इल्म जमात साफ शब्दों में कहती है:

हमें भारत सरकार से भी न्याय चाहिए और मुस्लिम समाज से भी।

हम चाहते हैं कि संवाद का रास्ता खुले, सवालों का जवाब मिले और दुनिया को यह दिखाया जाए कि मुसलमान अमन, इंसाफ़ और सहअस्तित्व की मिसाल बन सकते हैं।

तालिब-ए-इल्म जमात

चुनाचे हम तालिब ए इल्म है ओर दीन के प्रति हमारे उत्सुक प्रश्नों का जवाब हमारे मौलाना आलिम फाजिल देने के बजाए हम पर तसद्दुद के फतवे लगा देते है,, हम पर ex मुस्लिम मुल्हिद काफिर की कठपुतली होने का ठप्पा लगा देते है और समस्या जस की तस बनी रहती है,, की मुसलमानों का विवाद बाकी दुनिया से समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है जब रब कुलआलमीन ने सभी मखलूखों को बनाया है तो हमें जियो ओर जीने दो की तर्ज पर सारी दुनिया को दारुल अमन बनाने की पुर जोर कोशिश करनी चाहिए,,, ताकि फैसले के दिन अपने रब के सामने अपनी सफाई में हमारे पास बहुत कुछ हो,,, इसी कड़ी में बाकी दुनिया के सामने हमें मिशाल पेस करते हुए सैकुलर भारतीय देश में केवल मुसलमानों के ऊपर सरिया क्रिमिनल लॉ लागू करने का पुर जोर समर्थन करते है हमारे मुस्लिम समाज को चाहिए,, की खुद आगे बढ़कर सेकुलरिज्म के साथ बैलेंस बनाते हुए ओर बाकी समाजों का अधिकार रखते हुए
(भले ही भारतीय गवर्मेंट समय ले)

शहीद-ए- मुल्क अशफ़ाक उल्ला खां

तालिब-ए-इल्म जमात

पूर्व-मुस्लिम समीर
वरिष्ठ इस्लामिक scholar

परन्तु मुस्लिम समाज को खुद से ही अपने ऊपर सरिया क्रिमिनल लॉ लागू करने का बीड़ा उठाना चाहिए
Musalman par shariya crime law lagu karo

क्योकि हम सभी तालिब ए इल्म है, और जो अपने आप को fakhriya मुसलामान कहते हैं वो भी दर हकीकत तालिबान हैं बस फर्क़ इतना सा ये है कि जब वो सवाल पूछते हैं तो आलिमों fazilo की डांट खा कर चुप हो जाते हैं और जवाब नहीं ले पाते और जबकि हम लगातार सवाल पूछते है जो कि कुरान o अल्लाह ने हमे हक़ दिया है और दीन में ज़बर् की सुई की नोक बराबर भी गुंजाईश नहीं है तो ये पेट का दीन चलाने वाले हम पर ज़बर् लादने लगते है, कैद लगाने लगते है, हमें भारत सरकार से और मुस्लिम समाज से इन्साफ़ चाहिए

तालिब-ए-इल्म जमात

खातून - अनीशा बानो

तालिब-ए-इल्म जमात की सौहार्द यात्रा

प्रस्तावना

सम्मानित साथियों,

हम तालिब-ए-इल्म हैं- यानी ज्ञान के तलाशगार। हम मोमिन (शांति दूत) बनने की कोशिश करते हैं। हमारा उद्देश्य किसी से टकराव करना नहीं, बल्कि इस्लाम (समर्पण), ज्ञान, तर्क और अच्छे अमल के माध्यम से समाज में सौहार्द और शांति को बढ़ाना है। अगर "पेट का दीन" चलाने वाले लोग भ्रम, अफवाह या प्रोपेगेंडा फैलाते हैं, तो हमारा तरीका झगड़ा करना नहीं, बल्कि कुरआन और हदीस की अच्छी शिक्षाओं को सामने रखकर जवाब देना है।

क्योंकि पैग़म्बर ने फरमाया:

"मैं जन्नत के किनारे एक घर का ज़िम्मेदार हूँ उस व्यक्ति के लिए जो हक़ पर होने के बावजूद झगड़ा छोड़ दे।"

स्रोत: Sunan Abu Dawud - 4800

इसीलिए तालिब-ए-इल्म जमात के लोग कई बार खुद को सही मानते हुए भी विवाद और झगड़े से दूर रहने की कोशिश करते हैं।

रब-उल-आलमीन की मूल शिक्षाएँ

1

लोगों के लिए आसानी पैदा करो

"लोगों के लिए आसानी पैदा करो, मुश्किलें मत पैदा करो।"

स्रोत: सहीह अल-बुखारी 69, सहीह मुस्लिम 1734

2

सबसे अच्छा इंसान

"सबसे अच्छा इंसान वही है जो लोगों के लिए सबसे ज्यादा लाभदायक हो।"

स्रोत: Tabarani

तालिब-ए-इल्म जमात

3 मुस्कुराना भी सदका है "तुम्हारा अपने भाई के सामने मुस्कुराना भी सदका है।"

स्रोत: जामी एट-तिर्मिधि 1956

4 असली ताकत "ताकतवर वह नहीं जो कुश्ती में जीत जाए, बल्कि वह है जो गुस्से के समय खुद को काबू में रखे।" स्रोत: Sahih al-Bukhari 6114

5 पड़ोसी का हक़ "वह मोमिन नहीं जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से सुरक्षित न हो।"

स्रोत: Sahih Muslim 46

6 ज्ञान हासिल करना

"ज्ञान हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज़ है।" स्रोत: Sunan Ibn Majah 224 कुरआन की शिक्षाएँ

1 सोचने और समझने की दावत "निस्संदेह आसमानों और जमीन की रचना में समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं।"

स्रोत: Quran 3:190

2 ज्ञान की श्रेष्ठता "क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं?"

स्रोत: Quran 39:9

3 गैब पर ईमान "मोमिन वे हैं जो गैब पर ईमान लाते हैं।"

स्रोत: Quran 2:3

4 नजर की हिफाज़त "मोमिन पुरुषों से कह दो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें।"

युवा तालिब-ए-इल्म
Zafar

तालिब-ए-इल्म जमात

5 माता-पिता का सम्मान
"अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो।"
स्त्रोत: कुरान 17:23

6 बुराई का जवाब भलाई से
"बुराई को उस भलाई से टालो जो सबसे बेहतर हो।"
स्त्रोत: कुरान 17:34

7 धर्म में ज़बरदस्ती नहीं
"धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं है।"
स्त्रोत: कुरान 2:256

8 न्याय का आदेश
"किसी कौम की दुश्मनी तुम्हें न्याय से न रोके।"
स्त्रोत: कुरान 5:8

हमारा सामाजिक व्यवहार

हम अपने समाज की सभी महिलाओं मां, बहन, चाची, मामी, फूफी, भाभी और पड़ोसन सभी के साथ सम्मान और मर्यादा का व्यवहार करना अपना कर्तव्य समझते हैं। हम तालिब-ए-इल्म हैं, इसलिए सवाल करते हैं। क्योंकि ज्ञान का रास्ता सवालों से होकर गुजरता है।

कभी-कभी सवाल पूछने पर विरोध भी मिलता है, लेकिन हम प्रतिक्रिया में झगड़ा नहीं करते। क्योंकि हमें विश्वास है: ज्ञान और धैर्य ही असली ताकत है।

युवा तालिब-ए-इल्म
Zafar (Vol. 3)

तालिब-ए-इल्म जमात

हमारा विचार

हम मानते हैं कि दुनिया में होने वाली कई तकरारें उन लोगों की वजह से पैदा होती हैं जो "पेट का दीन" चलाने के लिए धर्म का उपयोग करते हैं और किताब में कत्लोगरात की बाते घुसाना इन्हीं की शरारत है।

हमारा प्रयास

हमारा प्रयास यह है कि रब-उल-आलमीन की मूल शिक्षाएँ - शांति, न्याय, करूणा और ज्ञान - सामने लाई जाएँ, ताकि इंसानियत को फायदा हो।

निवेदन

अगर किसी को हमारे विचारों पर कोई ऐतराज़ या सवाल हो, तो हम उनसे निवेदन करते हैं कि: तहमुल (धैर्य) के साथ बैठकर बात करें, ताकि मिलकर कोई बेहतर नतीजा निकाला जा सके।

शान्ति और इंसानियत

अगर कोई इंसान अच्छे अमल करे दूसरों के लिए आसानी पैदा करे गुस्से पर काबू रखे ज्ञान हासिल करे और झगड़े से बचे तो वही इंसान समाज में शांति और इंसानियत की मिसाल बन सकता है।
और हमें उम्मीद है कि जन्नत-ए-फिरदौस के असली वारिस वही होंगे।

एक नई किरण

युवा तालिब-ए-इल्म
Arisha Babar

तालिब-ए-इल्म जमात

जो ज्ञान, संयम, दया और न्याय के रास्ते पर चलेंगे।

अंतिम पंक्तियाँ

हमारी राह नफरत की नहीं- ज्ञान की राह है।
हमारी ताकत भीड़ नहीं - विचार है।
हमारा जवाब गुस्सा नहीं - तर्क है।
और हमारी पहचान झगड़ा नहीं सौहार्द है।

इसी सोच के साथ हम सौहार्द, विवेक और शांति के रास्ते पर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं।
हमारी मुसलमानों से पहली डिमांड अपने दिलों, विचारों, और किताबों से काफिरफोबिया और उसके अमालत नोच कर फैंक दे और दुनिया को दारूल अमन बनाये दुनिया को एक बगीचा, नहीं ब्लकि गुलशन बनाने में हमारे मददगार बन
हमारी मुसलमात्नों से दूसरी और आखिरी डिमांड केवल मुसलमानों पर अपनी खुद की मर्जी से शरीयत क्रिमिनल लॉ लागू हो ताकि ज़माना ए जहलेया के सामने मिसाल पेश की ज
हम भारत सरकार से आग्रह करते हैं कि चूकि भारत एक सेकुलर स्टेट है सो संविधान में हमारी यह मांग को कानूनी पटनाया जाए कि किसी भी भारतीय नागरिक की शिकायत के आधार पर एक मुसलामान्न अपराधी को शरियत क्रिमिनल लॉ के अंतर्गत लाया जाए।

Anay Thakur (Amar Balidani Ashfaq Ullah Khan ka Parpota)

"पेट का दीन" चलाने वालों के खिलाफ कुरआन और हदीस की दलीलें

1 धर्म को कमाई का साधन बनाना
मेरी आयतों के बदले थोड़ी कीमत मत लो।
स्रोत: कुरआन 2:41
दलील: इस आयत का सीधा संदेश है कि धर्म को व्यापार या व्यक्तिगत लाभ का साधन नहीं बनाना चाहिए।

2 धार्मिक नेताओं की आलोचना
बहुत से आलिम और दरवेश लोगों का माल नाजायज तरीके से खाते हैं।
स्रोत: कुरआन 9:34
दलील: कुरआन खुद चेतावनी देता है कि कुछ धार्मिक नेता धर्म के नाम पर लोगों का शोषण कर सकते हैं।

3 धर्म में मिलावट करना
सच्चाई को झूठ के साथ मत मिलाओ और सच्चाई को मत छिपाओ।
स्रोत: कुरआन 2:42
दलील: अगर कोई व्यक्ति धर्म में अपनी बात मिलाकर लोगों को गुमराह करता है तो यह कुरान के खिलाफ है।

तालिब ए इल्म
डा. अभिनव आर्य उर्फ अयूब खान

"पेट का दीन" चलाने वालों के खिलाफ कुरआन और हदीस की दलीलें

4 बिना ज्ञान के बोलना
"जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान नहीं, उसके पीछे मत पड़ो।"
स्रोत: कुरआन 17:36
दलील: धर्म के नाम पर बिना ज्ञान के फतवे देना गंभीर गलती है।

5 धर्म को कठिन बनाना
पैग़म्बर ने कहा: "लोगों के लिए आसानी पैदा करो, मुश्किलें मत पैदा करो।"
स्रोत: सहीह अल-बुखारी 69
दलील: अगर कोई व्यक्ति धर्म को जरूरत से ज्यादा कठिन बना देता है तो वह पैग़म्बर की शिक्षा के खिलाफ जा रहा है।

6 दिखावे की धार्मिकता
"तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो दिखावा करते हैं।"
स्रोत: कुरआन 107:4-6
दलील: सिर्फ बाहरी धार्मिकता लेकिन दिल में लालच कुरआन के अनुसार निंदनीय है।

तालिब ए इल्म
इलियास कुरैशी

"पेट का दीन" चलाने वालों के खिलाफ कुरआन और हदीस की दलीलें

7 धर्म के नाम पर सत्ता

"और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं।"
स्रोत: कुरआन 7:45
दलील: जब धर्म का उपयोग लोगों को डराने या रोकने के लिए होता है तो वह ईश्वरीय उद्देश्य से दूर हो जाता है।

8 झूठे धार्मिक दावे

"उससे बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ गढ़े।"
स्रोत: कुरआन 6:21
दलील: अगर कोई व्यक्ति धर्म के नाम पर अपनी बनाई बातें अल्लाह से जोड़ देता है तो यह बड़ा अन्याय है।

9 ज्ञान की महत्ता

"क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं?"
स्रोत: कुरआन 39:9
दलील: इस्लाम में ज्ञान अंधविश्वास से ऊपर है।

10 ईमानदारी की शिक्षा

पैग़म्बर ने कहा: "सबसे अच्छा इंसान वह है जो लोगों के लिए सबसे ज्यादा लाभदायक हो।"
स्रोत: तबरानी
दलील: अगर धर्म से समाज को लाभ नहीं मिल रहा तो उसका तरीका गलत है।

तालिब-ए-इल्म जमात का मूल संदेश:
हमारा उद्देश्य किसी व्यक्ति या समूह से लड़ना नहीं है।

हमारा उद्देश्य है कि धर्म को व्यापार बनने से रोका जाए।
कुरआन और पैग़म्बर की असली शिक्षाएँ सामने लाई जाएँ
इंसानियत, न्याय और ज्ञान को बढ़ाया जाए।

अंतिम संदेश:
अगर धर्म इंसान को बेहतर बनाए, समाज में न्याय लाए, दिलों में दया पैदा करे और ज्ञान को बढ़ाए, तो वही धर्म रब-उल-आलमीन की असली मंशा को पूरा करता है।

तालिब ए इल्म
Ex मुस्लिम एंजेल

"पेट का दीन" चलाने वालों के खिलाफ कुरआन और हदीस की दलीलें

तालिब-ए-इल्म जमात की प्रतिज्ञा

हम तमाम तालिब-ए-इल्म जमात के सदस्य यह पवित्र अहद (प्रतिज्ञा) उठाते हैं कि-

1 मख़लूक़ का सम्मान

हम रब-उल-आलमीन की हर मख़लूक़ का सम्मान करेंगे, और जब तक कोई हमें नुकसान न पहुँचाए, हम भी किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँगे।

2 मोहब्बत फैलाने का काम

हम यह वचन देते हैं कि हमअपने जीवन के हर पड़ाव पर नफ़रत नहीं, बल्कि मोहब्बत फैलाने का काम करेंगे, क्योंकि यही जिम्मेदारी इस ख़ालिक-ए-कायनात ने हम पर सौंपी है।

3 इल्म की तलाश

हम यह अहद करते हैं कि-
हम इल्म (ज्ञान) की तलाश को अपनी पहचान बनाएंगे

- हम सवाल करने, समझने और सच को अपनाने से पीछे नहीं हटेंगे
- हम ज़बरदस्ती, नफ़रत और अन्याय के खिलाफ खड़े रहेंगे

तालिब ए इल्म
गुलाबशा खातून

"पेट का दीन" चलाने वालों के खिलाफ कुरआन और हदीस की दलीलें

इसलिए हमारी
जिम्मेदारी है कि-
हम अपने हर अमल में
अर-रऊफ़ और अल-
वदूद (मोहब्बत करने
वाले) की दी हुई
मोहब्बत को ज़िंदा रखें
हम हर हाल में अस-
सलाम (अमन देने वाले)
का पैग़ाम
अमन और सुकून के
साथ फैलाएँ, हमें चाहिए
कि पेट का दीन चलाने
चलाने वालों की
गुमराह करने वाली बातों
में न आकर

हम अपने किरदार से
अल-अद्ल (न्याय करने
कने वाले) और अल-
हक़ (सत्य) की
मिसाल पेश करें, हम
गर्दन उतारने वाले नहीं
बल्कि अपनी गर्दन पेश
करने वाले हों.

मोहम्मद आसिफ अली

"पेट का दीन" चलाने वालों के खिलाफ कुरआन और हदीस की दलीलें

मोमिनों से अपील

ऐ मोमिनो, हमारी और आपकी सारी कसरत का मकसद
केवल एक है-कि रब-उल-आलमीन, अर-अर-रहीम, मालिक-ए-ख़ल्क़-ए-कायनात के मोहब्बत ए पैग़ाम को उसकी तमाम मख़लूक़ तक प्यार, अमन और चैन के साथ पहुँचाया जाए। हम यह समझते हैं कि-हम इस काम के मालिक नहीं, बल्कि अल-हादी (राह दिखाने वाले) और अल-लतीफ़ (नरमी से काम लेने वाले) के चुने हुए ज़रियों में से एक ज़रिया हैं।

तालिब ए इल्म
लतीफ भारतीय

हमारी असली पहचानः

हमारी पहचान बहस या टकराव नहीं, बल्कि अल-हलीम (सब्र करने वाले) की सिफ़त के साथ नरमी, समझ और मोहब्बत होनी चाहिए।

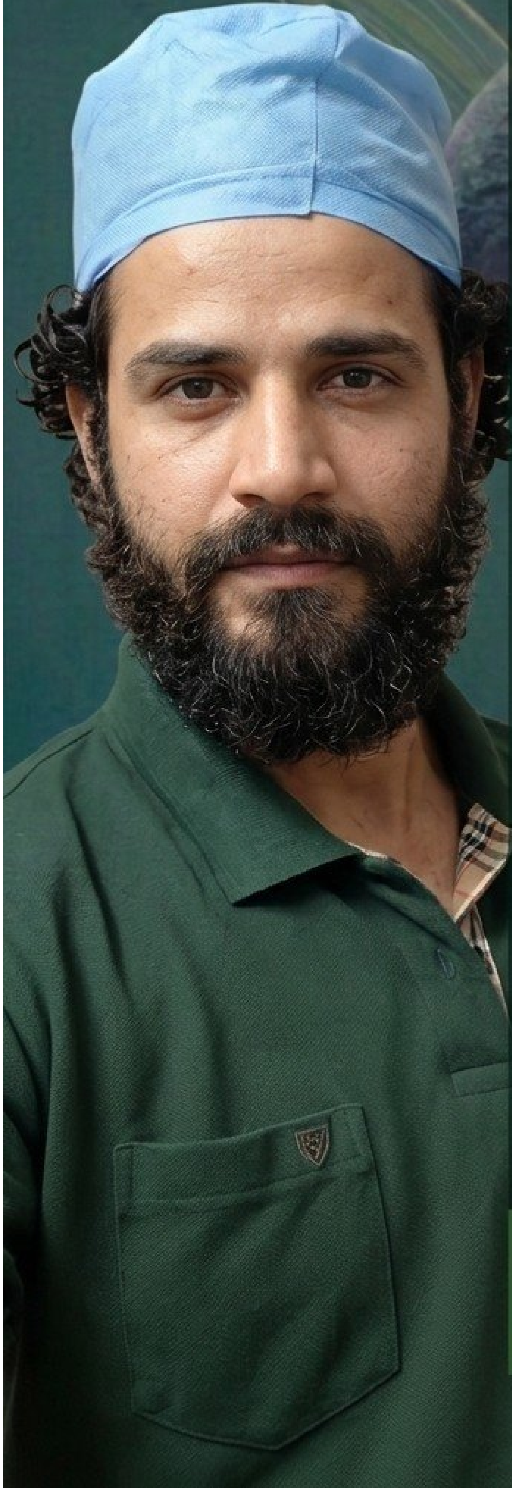

संदेशः

जब अर-रहमान की रहमत सबके लिए है, जब रब-उल-आलमीन की नेमतें सबको मिलती हैं, तो हमारा पैग़ाम भी हर इंसान तक, भेदभाव पहुँचना चाहिए।

हम अल्लाह के बंदे हैं, अल-वदूद की मोहब्बत के ज़रिया हैं-मोहब्बत फैलाना हमारी जिम्मेदारी है।

रब ने अमन की जो जिम्मेदारी हमें बख्शी है उस सड़के में हमें उन सब सख्त किताबी बातों से परहेज़ करना होगा जो इंतेशार फैलाती हैं

तालिब ए इल्म
अब्दुल्ला सयानी

"पेट का दीन" चलाने वालों के खिलाफ कुरआन और हदीस की दलीलें

हम हर हाल में अमन, इंसाफ़ और सहअस्तित्व का रास्ता चुनेंगे

हम यह भी वचन देते हैं कि-

1 भेदभाव रहित समाज

हम किसी भी इंसान के साथ धर्म, जाति या विचार के आधार पर भेदभाव नहीं करेंगे

2 संवाद और समझ

हम समाज में संवाद और समझ को बढ़ाने का कार्य करेंगे

3 इंसानियत की मिसाल

हम अपने व्यवहार से इंसानियत की मिसाल पेश करने की कोशिश करेंगे

4 मोहब्बत का पैग़ाम

हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि-

हम अपनी आख़िरी सांस तक मोहब्बत, अमन और इंसानियत का पैग़ाम फैलाते रहेंगे।

5 आत्म-सुधार

और अगर कभी हमसे कोई भूल हो, तो हम उसे स्वीकार कर आत्म-सुधार और सच्चाई के रास्ते पर वापस लौटेंगे।

अंतिम संकल्प

"हम तालिब-ए-इल्म जमात हैं हमारा रास्ता इल्म का है, हमारी पहचान मोहब्बत है, और हमारा लक्ष्य अमन और इंसानियत है।"

तालिब ए इल्म

दारा शिकोह

"पेट का दीन" चलाने वालों के खिलाफ कुरआन और हदीस की दलीलें

तालिब-ए-इल्म का मौक़िफ़
यह है कि–
हम अपने मादर-ए-वतन
हिन्दुस्तान में,
सेक्युलर क़ानून के ज़ेरे साया
रहते हुए,
अपने तमाम हमवतनों की
रहनुमाई में, उनके साथ
हम-आहंगी, इत्तेहाद और
बेहतर राब्ता-ओ-ताल्लुक़
क़ायम रखते हुए,
इंसानियत की रौशनी में
फ़राख़-दिली के साथ,
अपने इस वतन को तार्किक
और अनुसंधान की बुनियाद
से दारुल-अमन बनाने की
हर मुमकिन कोशिश करेंगे।

तालिब ए इल्म
युनुस

अहद (संकल्प)

अहद (संकल्प)

तालीब-ए-इल्म जमात के तालिबान (पुरुष) और तालिबात (नारी) यह पक्क अहद (संकल्प) करते हैं कि हम अपनी आख़िरी सांस तक किसी भी इंसान पर किसी तरह की जबरदस्ती नहीं करेंगे। ख़ास तौर पर दीन (धर्म) के मामले में हम किसी पर कोई दबाव, ज़बरदस्ती या थोपने की कोशिश नहीं करेंगे, बल्कि हर इंसान की आज़ादी-ए-इख़्तियार (स्वतंत्र इच्छा) और उसके व्यक्तिगत अधिकारों का पूरा सम्मान करेंगे।

तालिब ए इल्म
मुस्लिम हाशिम भारतीय

अहद (संकल्प)

अहद (संकल्प)

हम यह भी वादा करते हैं कि हम अपने हर अमल में अमन, भाईचारा, मोहब्बत, मोहब्बत, सहनशीलता और समझदारी को अपनाएंगे। हम नफ़रत, तंगदिली और भेदभाव से दूर रहेंगे और समाज में एकता, इंसाफ और इंसानियत को बढ़ावा देने का काम करेंगे।

हम यह भी वादा करते हैं कि हम अपने हर अमल में अमन, भाईचारा, मोहब्बत, सहनशीलता और समझदारी को अपनाएंगे। हम नफ़रत, तंगदिली और भेदभाव से दूर रहेंगे और समाज में एकता, इंसाफ और इंसानियत को बढ़ावा देने का काम करेंगे।

हम अपने अख़लाक़ (चरित्र) और किरदार (व्यवहार) को ऐसा बनाएंगे कि लोग हमारे अमल से अच्छाई और सच्चाई की पहचान करें। हम इल्म (ज्ञान) को सिर्फ हासिल ही नहीं करेंगे, बल्कि उसे सही रास्ते में इस्तेमाल करते हुए इंसानियत की भलाई, समाज की बेहतरी और मुल्क की तरक़्क़ी के लिए काम करेंगे।

तालिब ए इल्म
मुस्लिम गुलफाम

अहद संकल्प

मोमिनों से अपील

हम हमेशा सच, इंसाफ और ईमानदारी के रास्ते पर चलने की कोशिश करेंगे, चाहे हालात कैसे भी क्यों न हों। हम एक-दूसरे की इज़्ज़त करेंगे, कमजोरों का सहारा बनेंगे और हर उस काम से दूर रहेंगे जो समाज में फसाद या नफरत फैलाए।
अल्लाह को गवाह मानकर हम यह अहद करते हैं कि हम अपने इल्म, अपने किरदार और अपने अमल से दुनिया में भलाई, अमन और इंसानियत का पैग़ाम फैलाने की हर मुमकिन कोशिश करते रहेंगे।

तालिब ए इल्म
असद्धुदीन अंसारी

तालिब-ए-इल्म जमात की सालाह
(इबादत का उसूल)

तालिब-ए-इल्म जमात का यह
पुख्ता ईमान है कि हमारा रब ।
ला-आनी (जिसका कोई मिस्ल नहीं),
ला-फानी (जो कभी ख़त्म नहीं होता),
अल-अव्वल (सबसे पहले),
अल-आखिर (सबके बाद),
अज़-ज़ाहिर (जो ज़ाहिर है),
अल-बातिन (जो हर चीज़ के अंदर
है) है।
बह रहमान (बेइंतिहा मेहरबान),
रहीम (निहायत रहम करने वाला),
ग़फर (बख्शने वाला), सत्तार (पर्दा
डालने वाला), करीम (बड़ा दाता),
रज़्ज़ाक़ (रिज़्क देने वाला), हकीम
(हिकमत वाला), अलीम (सब कुछ
जानने वाला),
क़ाडिर (हर चीज़ पर कुदरत रखने
वाला), समीयँ (सब सुनने वाला),
बसीर (सब देखने वाला) है।
बह हर ऐब से पाक, हर सिफ़त
मे कामिल, हर जमह मौजूद,
हर दिल के क़रीब और हर हालत
से वाक़िफ़ है।

तालिब ए इल्म
शिबू कृष्णदासी

तालिब-ए-इल्म जमात की सालात

(इबादत का उसूल)

हम यह भी मानते हैं कि हर चड़ी, हर दिन, हर हफता, हर महीना और हर साल - सव उसी रव की बनाई हुई हैं, और उसकी बनाई हुई हर वीज़ अपनी असल में पाक और मुक़द्दस हैं।

चुनाचे, इवादत हमारे लिए किसी रवास वक़्त, जगह या हालत तक महदूद (सीभित) नहीं हैं।

हम हर वक्त, हर हालत में, हर जगह, किसी भी तरिकि से अपने रव सी जुड़ सकते हैं, उरो याद कर सकते हैं, उसवे दुआ कर सकते हैं, और अपनी सालात पेश कर सकते हैं।

हमारी सालात सिर्फ़ जाहिरी रस्म नहीं, बल्कि दिल की हाजिरी, नीयत की सफ़ाई और अमल की सच्वाई हैं.

हम हर सांब के साय अपने रव को याद करना, हर काम को इवादत बनाना, और हर इँसान के साय भलाई, अल, मोहब्बत और रहम का बर्ताव करना समझते हैं।

तालिब ए इल्म

शब्बन